माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में राष्ट्र प्रेम

डॉ. कामना कौशिक
विभागाध्यक्ष हिन्दी
सी.एम.के. नेशनल पी.जी. गर्ल्ज महाविद्यालय सिरसा।
Email - kamnacmk78@gmail.com

प्रस्तावनाः प्रेम जीवन का एक अनिवार्य अंग है। इसी से मानव जीवन सार्थकता पाता है। प्रेम की परिधि का क्षेत्र विस्तृत है। घर–परिवार के सीमित दायरे से बाहर आकर यह राष्ट्र प्रेम का रूप ले लेता है। राष्ट्र प्रेम से ही जीवन व समाज के श्रेष्ठ का सही गति व दिशा प्राप्त होती है। राष्ट्र प्रेम की इसी महत्ता को माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में चित्रांकित किया गया है जिसका उल्लेख यहाँ मैं करने जा रही हूँ।

माखनलाल चतुर्वेदी का जीवन सादगी व सरलता से परिपूर्ण था। अपने विशिष्ट व्यक्तित्व के कारण परन्तन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए इन्होनें तन–मन–धन व कलम से मातृभूमि की सेवा की। देश–प्रेम की भावना इनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। राष्ट्र हित इनके जीवन का प्राथमिक ध्येय था। इनकी कृतियों में उनकी इस भावना की अमिट छाप देखी जा सकती है। चतुर्वेदी जी के काव्य में राष्ट्र–विरोधी रूढ़ियों एवम् गली सड़ी परम्पराओं के प्रति विद्रोह व्यक्त किया गया है। आपके काव्य में गौरवमय भारतीय संस्कृति के प्रति तीव्रानुराग व्यक्त किया गया है। आपने जन–साधारण को सम्पूर्ण राष्ट्र की एकता व अखण्डता को स्थिर रखने के लिए प्रोत्साहित किया।

भारत को स्वाधीनता का खुला परिणाम देने के लिए आपने अथक प्रयास किए। विदेश सत्ता को उखाड़ फैकनें के लिए आपने सबको एकजुट करने का प्रयास करते हुए कहा–

''केरल से कश्मीर तलक हैं हम भाई–भाई,
कावेरी, कृष्णा की नर्मदा, गंगा, यमुना साथ रहे।
हमें ना तोड़ सकेगा कोई हम माँ के जाए बन्धु रहे,
चरण–चरण चल पड़ी मातृ–भू–वरण–वरण संतान लिए।।''[1]

ब्रिटिश शासकों के अन्याय व अत्याचारों का विरोध करने के लिए वे भारतीयों का आह्वान करते हैं। इसके लिए कठोर से कठोर यातना को भी सहन करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

''ब्रिटिश निशानों पर
विपदा के वाणों पर
मेरे प्यारे प्राणों पर,
खेल चल भाई।
जेल चल, जेल चल, जेल चल भाई।।''[2]

महात्मा गांधी के जीवन का इनके जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव था। सन् 1914 में महात्मा गांधी जी सत्याग्रह संग्राम चल रहे थे। उस समय चतुर्वेदी ने अपनी आस्था श्रद्धा उनके प्रति व्यक्त करते हुए अपने आजादी के स्वर में ओर भी उत्साह व स्फूर्ति की नई लहर पैदा कर जन–जन को जागृत करने का प्रयास किया यथा–

''क्यों पड़ी परतन्त्रता कि बेड़ियाँ?
दासता की हाय हथकड़ियाँा पड़ी
न्याय के 'मुँह बंद' फाँसी के लिए,
कंठ पर जंजीर की लड़ियाँ पड़ी''[3]

राष्ट्र उत्थान तभी सम्भव है जब सामाजिक विषमता का अन्त हो। समाज में शोषक व शाषित वर्ग न हो। सभी में समानता विद्यमान हो, तभी जन–कल्याण व राष्ट्र–उत्थान का समना साकार रूप ले पाएगा। कवि कहता है–

''महलों पर कुटियों की वारो
पकवानों पर दूध–दही''

X X X X X X

सामाजिक विषमता को समाप्त करने के साथ–साथ स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर भी बल देना होगा ताकि हम विदेश शक्तियों को यहाँ से जल्द से जल्द जाने पर मजबूर कर सकें। स्वदेशानुराग की चिंगारी फूंकता हुआ कवि कहता है–

तुम मन्द चलो,
ध्वनि के खतरे बिखेर मग में–
तुम मन्द चलो
सूझो का पहिन कलेवर सा,

विकलाई का जेवर सा
धुल–धुल आँखों के पानी में–
फिर छलक–छलक बन छनद चलो–
पर मन्द चलो।।''[4]

कवि राष्ट्र प्रेम की भावना को जागृत करते हुए युवाओं में उत्साह व जोश का संचार करते हुए कहता है कि–

जवानी के लिए यह पृथ्वी क्या है–
X X X X X X
धरा यह तरबूज है दो फांक कर दे''[5]

टंग्रजो की दमनकारी नीतियों से भारतीय जनता का सब्र का बांध टूट रहा था। उनमें डर व आंतक जन्म लेने लगा था। तब उस समय चतुर्वेदी ने भारतीय जनमानस को बलिदान व सर्वस्व न्यौछावर के लिए प्रेरित करते हुए कहा–

बेटे बलिदान हो
माता की गई लाज मिले
होऊ आजाद हो–
काँटो को भले, ताज मिले
शेष महीने है, जोर हो तो
सज–बाज मिले
मर के दिखला दो तो
प्यारे तुम्हें स्वराज्य मिले।''[6]

जब अंग्रेजों ने भारत में अपना अधिकार जमा लिया था और व्यापार के बहाने वे धीरे–धीरे भारतीय आदर्शों व मूल्यों को हानि पहुँचा रहे थे और भारत के अस्तित्व को मिटाने की कोशिश कर रहे थे, तब कवि जोश व ओझ के साथ उन्हें ललकारता हुआ कहता है–

''क्या कहा कि यह घर मेरा है?
जिसके रवि उगे जेलों में सन्धया होवे विरानों में
उसके कानों में क्या कहते आते हो? यह मेरा घर है।।''
X X X X X X
हो मुकुट हिमालय पहनता, सागर जिसके पग धुलवाता,
यह बंधा बेड़ियों में मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारा मेरा है।
क्या कहा कि यह घर मेरा है।''[7]

चतुर्वेदी जी में राष्ट्र प्रेम की भावना कूट–कूट कर भरी हुई होने के कारण उनके काव्य में वीर–रस की अधिकता देखने को मिलती है। वीर–रस की अपूर्व व्यंजना इनके काव्य में अनेक स्थलों पर सुन्दर रुप से चित्रित हुई है।

''अरिमुंडों का दान, रक्त–तर्पण–भर का अभिमान
लड़ने तक महमान, एक पूँजी है तीर–कमान।
मुझे भूलने में सुख पाती, जग की काली स्याही,
दासों दूर, कठिन सौदा है, मैं हूँ एक सिपाही।''[8]

स्वार्णिम भारत का स्वपन साकार करने के लिए हमस ब भारतीयों को एक जुट होकर प्रयास करने होंगे। सभी को अपने स्वार्थों को त्याग कर देशहित के लिए अपने आप को न्यौछावर करना होगा। कवि राष्ट्र हित हेतु हम सबका आह्वान करते हुए कहता है–

''गंगा माँग रही है मस्तक, जमुना माँग रही है सपने
आज जवानी स्वयं टटोले सिर हथेलियाँ अपने–अपने।
X X X X X X
चलो, सजाओ सैन्य, समय की भरपाई के दिन आए है
आज प्राण देने के, युग की तरूणाई के दिन आए हैं।''[9]

उपसंहार–

माखनलाल चतुर्वेदी के काव्यों में राष्ट्र प्रेम की उदात्त भावना विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर हुई है यथा स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग के द्वारा सामाजिक विषमता को खत्म करने का प्रयास करते हुए, व्यक्तिगत स्वार्थों को त्यागना यथार्थ को स्वीकारना, एकजुट होकर राष्ट्र हित का प्रयास करना, देशहित को जीवन का ध्येय बनाना, राष्ट्रीय एकता, अखएडता एवं देश की स्वाधीनता के लिए तन–मन–धन से न्यौछावर हो जाना आदि। निःसंदेह इनका काव्य राष्ट्रीय स्वाधीनता की

चिन्गारी को हवा देने वाला महत्त्वपूर्ण तत्व है। जिसने जन–साधारण के हृदय में स्वाधीनता की भावना को जागृत करते हुए त्याग, बलिदान आदि भावों का संचार किया।

संदर्भ सूचि–

1. माखनलाल चतुर्वेदी, एक चिंतन, डॉ० रंजन पृ० 24
2. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–6 पृ० 95
3. माखनलाल चतुर्वेदी, यात्रा पुरूष पृ० 368
4. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–6 पृ० 152
5. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–6 पृ० 215
6. माखनलाल चतुर्वेदी, माता पृ० 67–68
7. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–6 पृ० 168
8. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–6 पृ० 94
9. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली, भाग–7 पृ० 210